प्रेम और सौन्दर्य

कवि परिचय

पद्‌माकर

पद्‌माकर रीतिकाल के श्रेष्ठ कवियों में से एक हैं। इनके पूर्वज दक्षिण के तेलंग ब्राह्मण थे। पद्‌माकर के पिता मोहनलाल भट्ट सागर में बस गए थे। यहीं पद्‌माकर जी का जन्म सन् 1753 में हुआ। सागर के तालाब घाट पर पद्‌माकरजी की मूर्ति स्थापित है। पद्‌माकर एक प्रतिभा सम्पन्न कवि थे। इन्हें कवित्त शक्ति वंश परम्परा से ही प्राप्त थी। मात्र 9 वर्ष की उम्र में ही वे कविता लिखने लगे थे।

पद्‌माकर राज दरबारी कवि थे। राजाओं की प्रशंसा में उन्होंने हिम्मत बहादुर विरुदावली, प्रतापसिंह विरुदावली और जगत विनोद की रचना की। जीवन के अंतिम समय में उन्हें कुष्ठ रोग हो गया। उससे मुक्ति के लिए गंगाजी की स्तुति में 'गंगा लहरी' लिखते हुए यहीं उनका 80 वर्ष की आयु में सन् 1833 में निधन हो गया।

पद्‌माकर जी के रचित ग्रंथ है- पद्‌माभरण जगत विनोद, आलीशाह प्रकाश, हिम्मत बहादुर विरुदावली, प्रतापसिंह विरुदावली, प्रबोध पचासा, गंगालहरी, राम रसायन।

पद्‌माकर जी का सम्पूर्ण जीवन राजाश्रयों में ठाट-बाट पूर्वक बीता। इसलिए उनके काव्य में प्रेम और शृंगार का प्राधान्य है वैसे उनके काव्य में रीतिकाल की सभी विशेषताएँ और परम्पराएँ विकसित हुई हैं। उन्होंने शृंगार के दोनों पक्षों संयोग और वियोग का वर्णन किया है।

पद्‌माकर का प्रकृति-चित्रण विशेष रूप से षट् ऋतु वर्णन बहुत प्रसिद्ध है। अपने अंतिम दिनों में

प्रेम ईश्वर का ही रूप है। लौकिक प्रेमानुभूति ही अलौकिक प्रेमानुभूति का आधार है। लौकिक प्रेम, मानवीय, रचनात्मकता से संबंधित है।

प्रेम का विस्तार भक्ति, वात्सल्य और दाम्पत्य भाव के अंतर्गत होता है। प्रेम की पृष्ठभूमि रति स्थायी भाव से निर्मित है। इसलिए शृंगार रस का स्थायी भाव रति है। शृंगार के संयोग और वियोग दो भेद होते है। संयोग में प्रिय की रूपचेष्टा, आदि का वर्णन किया जाता है, जबकि वियोग में प्रिय से अलग होने की स्मृतिजन्य, वेदना-व्यथा का वर्णन होता है। हिन्दी काव्य के इतिहास में प्रेम की केन्द्रीय भूमिका रही है। इसी आधार पर शृंगार पर आधारित काव्य प्रायः प्रत्येक युग में प्रचुर मात्रा में रचा गया। भक्ति काल में ईश्वरीय प्रेम और ईश्वरीय सौन्दर्य के वर्णन के प्रसंग प्राप्त होते हैं तो रीतिकाल में लौकिक प्रेम के क्षेत्र में नारी-पुरुष, या नायक-नायिकाओं के मिलन-विरह के भाव चित्र प्राप्त होते हैं। रीतिकाल को शृंगार काल भी कहा गया है।

इस काल में शृंगार की अनेक भाव दशाओं का जीवंत और प्रभावशाली वर्णन कवियों ने किया है। केशव, बिहारी, घनानंद, पद्‌माकर, मतिराम, सेनापति आदि कवियों ने प्रेम और सौन्दर्य के आकर्षक दृश्य प्रस्तुत किए हैं।

पद्‌माकर के काव्य में प्रेम और शृंगार का अनुभूतिपरक चित्रण हुआ है। राधा-कृष्ण की शृंगारिक लीलाओं के वर्णन में कवि ने मिलन-विरह के अनूठे संदर्भ उद्‌घाटित किए हैं। प्रस्तुत पदों में पद्‌माकर ने फाग खेलते कृष्ण की चेष्टाओं को अपनी आँखों में बसाये राधा की अनुरक्ति का, कृष्ण की बाँसुरी के स्वर में सुध-बुध भुला बैठी गोपिका का, सावन के झूलों पर झूलते नायक-नायिका के भीतर विकसित होते नेह-दुलार- का तथा निर्मोही कृष्ण की स्मृतियों में डूबी गृह-कार्यों से उदासीन राधा की मनोदशा का हृदय-ग्राही वर्णन किया है। राधा-कृष्ण के एकांतिक प्रेम दशा का विवेचन और उनके प्रेम परिपूर्ण बहानों का उल्लेख करके पद्‌माकर ने मनोभावों की सूक्ष्मता को स्पष्ट किया है।

मतिराम का शृंगार वर्णन अद्वितीय है। राधा-कृष्ण के रूप सौंन्दर्य, चेष्टा-सौन्दर्य और शील सौंन्दर्य का वर्णन मतिराम ने अपने काव्य में विदग्धता से किया है। प्रस्तुत काव्यांशों में उन्होंने राधा-कृष्ण के अपरिमित प्रेम, उनकी मिलन चेष्टाओं, उनके रूप-सौन्दर्य, उनकी अनुरागमयी लीलाओं और उनकी मान मनुहार का क्रियात्मक वर्णन किया है। मिलन-वियोग में मतिराम ने राधा-कृष्ण के माध्यम से शृंगार रस के विभाव, अनुभाव और संचारी भावों का मधुरिम चित्रण किया है।

शारीरिक कष्टों के कारण उनका झुकाव भक्ति की ओर हुआ । गंगा लहरी, प्रबोध पचासा, राम रसायन में उनकी भक्ति भावना और वैराग्य की भावना प्रकट हुई है।

पद्माकर ने ब्रज भाषा में काव्य रचना की है। उनकी प्रारम्भिक कविताओं में बुन्देली का प्रभाव है। उसमें कहीं-कहीं उर्दू, फारसी के प्रचलित शब्द भी मिलते है। भाषा पर उनका अधिकार था । उनकी रचना में यथा स्थान अलंकारों का प्रयोग हुआ है। अनुप्रास का उनकी भाषा में प्रचुरता से प्रयोग हुआ है। एक उदाहरण देखिए-

कूलन में, केलिन में,कछारन में , कुंजन में।
क्यारिन में, कलिन कलीन किलकंत है॥

अनुप्रास के अतिरिक्त इन्होंने यमक, श्लेष,उपमा,उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों का भी प्रयोग किया है। उनकी रचनाओं में लोकोक्तियाँ और मुहावरों का भी सफलता के साथ प्रयोग हुआ है। जैसे :-

नैन नचाई कही मुसकाई,लला फिरि आइयो खेलन होरी।

पद्माकर नि:संदेह रीतिकाल के श्रेष्ठ कवियों में से एक थे। इनकी भाषा की विशेषता बताते हुए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है 'भाषा की सब प्रकार की शक्तियों पर इनका अधिकार दिखाई पड़ता है। इनकी भाषा में वह अनेक रूपता है जो एक बड़े कवि में होना चाहिए।' अनुप्रास द्वारा ध्वनि चित्र खड़ा करने में भी वे अद्वितीय हैं। वस्तुत: पद्माकर रीतिकालीन परम्परा के उत्तरार्द्ध के प्रतिनिधि कवि है।

पद्माकर के छन्द

एकै संग धाय नन्दलाल औ गुलाल दोऊ
दृगनि गए जुभरि आनन्द मढ़े नहीं।
धोइ-धोइ हारी पद्माकर, तिहारी सौं,
अब तो उपाय एकौ चित पै चढ़े नहीं॥
कैसी करो कहाँ जाऊँ कासौं कहौं कौन सुनै।
कोऊ तो निकासौ जासौ दरद बढ़े नहीं।
ऐरी मेरी वीर जैसे तैसे इन आँखिन तैं।
कढ़िगो अबीर पै अहीर तो कढ़े नहीं॥1॥

आई संग आलिन के ननद पठाई नीठि।
सोहति सुहाई सीस ईडुरी सुघट की।
कहै पद्माकर गम्भीर जमुना के तीर।
नीर लागी भरन नवेली नेह अरकी।
ताही समै मोहन सु बांसुरी बजाई।
तामै मधुर मलार गाई ओर बंसीवट की।
तल लगि लटकी रहीं न सुधि घूंघट की।
घटकी न औघट की घाट की न घर की।। 2॥

भौरन कौ गुंजन बिहार बनकुंजन में,
मंजुल मलहारन को गावनो लगत है।
कहैं पद्माकर गुमान हूँ ते मानहूँ ते
प्राण हूँ तें प्यारो मनभावनों लगत है।
भोरन को सोर घनघोर चहुँ ओरन,
हिंडोरन को वृंद छवि छावनो लगत है।
नेह सरसावन में मेह बरसावन में,
सावन में झूलियो सुहावनो लगत है॥ 3॥

घर न सुहात न सुहात वन बाहिर हू।
बागन सुहात जो खुसाल सुखबोही सों।
कहै पद्माकर घनेरे धन धाम त्यों ही
चैंन न सुहात चाँदनी हूँ जोग जोही सों॥
साँझ हूँ सुहात न सुहात दिन माँझ कछु।
ब्याही यह बात सो बखानत हो तोही सों।
साँझ हूँ सुहात ना सुहात परभात आली।
जब मन लागि जात काई निरमोही सौं॥ 4॥

आरस सो आरत सम्हारत न सीस-पट,
गजब गुजारति गरीवन की धार पर।
कहें पद्माकर सुरासो सरसार तैसे,
बिथुरि बिराजै बार हीरन के हार पर।
छाजत छबीले छिति छहरि हरा के छोर,
भोर उठि आई केलि-मन्दिर के द्वार पर।
एक पग भीतर औ एक देहरी पै धरै,
एक कर कंज, एक कर है किबार पर।। 5॥

कवि परिचय

मतिराम

मतिराम सौन्दर्य वर्णन में अद्वितीय हैं। मतिराम के दोहे बिहारी के दोहों की समता रखते हैं। हिन्दी साहित्य में यह एक उदाहरण है, जब दो सगे भाई मतिराम और भूषण उच्च कोटि के कवि हुए। कविता के क्षेत्र में इन दोनों ने उत्कृष्ट ख्याति प्राप्त की। कविवर मतिराम के पिताजी का नाम रत्नाकर था। ये कानपुर के एक गाँव तिकवांपुर के रहने वाले थे। इनका जन्म 17वीं शताब्दी में हुआ। वे बून्दी के महाराज भावसिंह के दरबारी कवि थे। जन्म तिथि के समान ही मतिराम के निधन के सम्बन्ध में भी विवाद है।

मतिराम के लिखे कुल नौ ग्रंथ बताए जाते हैं। किन्तु उनमें से 4 ग्रंथ ही उपलब्ध हैं। वे हैं–फूल मंजरी, रसराज, ललित ललाम और मतिराम सतसई। इस सतसई में 703 दोहे हैं।

यों तो मतिराम रीतिबद्ध कवियों में शामिल किये जाते हैं, किन्तु उनकी रचनाएँ कृत्रिमता से कोसों दूर हैं। सहज प्रेम के मर्म स्पर्शी चित्रों में जो भाव व्यक्त किए गए हैं वे सभी साधारण जनों की सामान्य अनुभूति के अंग हैं।

मतिराम की भाषा के विविध रूप दृष्टिगोचर होते हैं। उनकी भाषा विशुद्ध ब्रजभाषा है। वे अलंकारों के फेर में नहीं पड़े हैं। माधुर्य तो इनके काव्य में सबसे अधिक है। मतिराम का एक ग्रंथ है,'रसराज'। इसमें श्रृंगार रस का वर्णन अधिक नही है, अलंकारों का ही वर्णन अधिक है। उनकी कविता में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, व्यतिरेक, अतिशयोक्ति आदि अलंकारों का उपयुक्त प्रयोग हुआ है। मतिराम का अलंकार विधान स्वाभाविक है। इससे उनकी रचना में सौन्दर्य आ गया है। मतिराम रीतिकाल के शीर्षस्थ कवियों में माने जाते हैं। उनकी कविता की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि जहाँ अन्य कवि केवल अन्तिम

मतिराम के छन्द

॥ 1 ॥

कुंदन कौ रंग फीको लगै, झलकैं अति अंगन चारु गुराई।
आँखिन में अलसानि चितौन में मंजु बिलासन की सरसाई।
को बिन मोल बिकात नहीं, मतिराम लहै मुसकानि मिठाई।
ज्यों-ज्यों निहारिए नेरे ह्वै नैनहिं, त्यों-त्यों खरी निकरै सी निकाई॥

॥ 2 ॥

कोऊ नहीं बरजै मतिराम रहो तितही जितही मन भायो।
काहे कौ सौंहे हजार करौ, तुम तो कबहूँ अपराध न ठायो।
सोवन दीजै, न दीजै हमें दुख, यों ही कहा रसवाद बढ़ायो।
मान रहोई नहीं मनमोहन मानिनी होय से सो मानैं मनायो॥

॥ 3 ॥

मोर-पखा 'मतिराम' किरीट मनोहर मूरति सौं मनु लैगो।
कुंडल डोलनि, गोल कपोलनि, बोल सनेह के बीज-से बैगो।
लाल बिलोचनि-कौलनि सौं मुसकाइ इतैं अरुझाइ चितैगों।
एक घरी घन से तन सौं अँखियान घनो घनसार सो दैगो॥

॥ 4 ॥

मोर-पखा 'मतिराम' किरीट में कंठ बनी बनमाल सुहाई।
मोहन की मुसकानि मनोहर, कुंडल डोलनि मैं छबि छाई।
लोचन लोल बिसाल बिलोकनि कौ न बिलोकि भयो बस माई।
वा मुख की मधुराई कहाँ कहौं? मीठी लगै अँखियान लुनाई॥।

चमत्कार पूर्ण चरण के लिये शेष तीन चरणों का पूरक विधान किया करते थे, मतिराम के सवैए चमत्कार के फेर मे न पड़कर समग्रता में प्रभाव उत्पन्न करते हैं। इसीलिए सहज कृतित्व की दृष्टि से रीतिकालीन कवियों में मतिराम का स्थान बहुत ऊँचा है। यह लक्षण ग्रंथ प्रणेता एवं ख्याति प्राप्त उच्च कोटि के व्यक्तित्व हैं। इन्हें आचार्य एवं महाकवि कहा जा सकता है।

॥ 5 ॥

गोप सुता कहै गौरि गोसाँइनि, पायँ परौं विनती सुनि लीजै।
दीन दयानिधि दासी के ऊपर, नेकु सुचित्त दया रस भीजै।
देहि जो ब्याहि उछाह सो मोहनै, मातु-पिताहु को सो मन कीजै
सुंदर साँवरों नन्दकुमार, बसै उर में बरु सो बरुदीजै॥

अभ्यास

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. गोपिका की आँखों में कौन से दो तत्व भर गए हैं?
2. पद्माकर की गापियों को सुबह शाम और घर बाहर अच्छा क्यों नहीं लगता है?
3. गोप-सुता पार्वती माँ से क्या वरदान माँगती है?
4. ''वा मुख की मधुराई कहाँ-कहौ?'' में मतिराम ने किस मुख की ओर संकेत किया है?
5. श्री कृष्ण के मुकुट में कौन-सी वस्तु लगी हैं?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. गोपियों पर कृष्ण की वंशी का क्या प्रभाव पड़ता है ? लिखिए।
2. 'मान रहोई नहीं मन मोहन मानिनी होय सो मानै मनायों' का आशय स्पष्ट कीजिए।
3. मतिराम के शब्दों में श्री कृष्ण की छवि का मोहक वर्णन कीजिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. गोपिका श्री कृष्ण की छवि को नेत्रों से बाहर निकालने में क्यों असमर्थ है?
2. 'को बिन मोल बिकात नहीं,' कवि ने ऐसा क्यों कहा है? समझाइए।
3. आशय स्पष्ट कीजिए-

क. कुंदन को रंग फीको लगे झलके अति अंगन-चारु गुराई।

ख. एक पग भीतर औ एक देहरी पै धरे, एक कर कंज, एक कर है किबार पर।

ग. नेह सरसावन में मेह बरसावन में, सावन में झूलियों सुहावनो लगत है।

4. निम्नलिखित काव्यांश की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए-

अ. कैसी करो कहाँ जाऊँ कासौं कहौं कौन सुने,
कोउ तौ निकासौ जासौ दरद बढ़ै नहीं।
एरी मेरी बीर! जैसे तैसे इन आँखिन तैं
कढ़िगो अबीर पै अहीर तो कढ़ै नहीं।

आ. कुन्दन कौ रंगु फीको लगे, झलके अति अंगन चारू गुराई,
आँखिन में अलसानी चितौन में मंजु विलासन की सरसाई ।
को बिन मोल बिकात नहीं, मतिराम लहै मुस्कानि मिठाई,
ज्यौं-ज्यौं निहारिए नेरे ह्वै, त्यौं त्यौं खरी निकरै सी निकाई॥

काव्य सौन्दर्य-

1. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए:-
मोल, नेरे, मूरति, सनेह, घरी, देहरी, किबार, सौंह, घूंघट

2. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार, उनके सामने दिए गए विकल्पों में से छाँटकर लिखिए:-
(अ) घटकी न औघट की घाट की न घर की। (यमक/ श्लेष/अनुप्रास)
(आ) छाजत छबीले छिति छहरि हरा के छोर (अनुप्रास/यमक/श्लेष)
(इ) ज्यों-ज्यों निहारिए नेरे ह्वै नैनहिं,
त्यों-त्यों निकरै सी निकाई, (उपमा/पुनरूक्ति/रूपक)
(ई) एक घरी घन से तन सौं, अँखियान घनो घनसार सौ दैगो। (उपमा/रूपक/उत्प्रेक्षा)

3. काव्य में भाव-सौन्दर्य और शब्द विन्यास का अन्योन्याश्रित संबंध रहता है एक के बिना दूसरे की कल्पना करना कठिन हो जाता है। ऐसे स्थल मतिराम जैसे कवियों की रचनाओं में कलात्मक उपलब्धि की दृष्टि से बहुत श्रेष्ठ बन पड़े हैं। ऐसा ही भाव सौन्दर्य और शब्द सौन्दर्य का उदाहरण देखिए-
"मान रह्योई नहीं मनमोहन मानिनी होई सो मनायो" इस प्रकार के अन्य उदाहरण इस संकलन से चुनकर लिखिए।

समझिए-

नगर से दूर कुछ गाँव की सी बस्ती एक - 16 वर्ण
हरे भरे खेतों के समीप अति अभिराम।
जहाँ पत्रजाल अन्तराल से झलकते हैं
लाल खपरैले श्वेत छज्जों के संवारे धाम।
बीचों-बीच वह वृक्ष खड़ा है विशाल एक
झूलते हैं बाल कभी जिसकी लताएँ थाम।

चढ़ी मंजु मालती लता है जहाँ छायीं हुई
पत्थर के पहियों की चौकियाँ पड़ी हैं श्याम

इस छंद में एक चरण में कुल 32 वर्ण है इसमें 8-8 पर यति से 32 वर्ण होते है। इस छन्द को घनाक्षरी छंद कहते हैं।

जाके पद माँहि हौंहि बरण बत्तीस सब।
और भेद नाँहि कोह अंत्य लघु नित्य धरि॥
घनाक्षरी छंद सोय सबै कवि लोग कहैं।
सोला अरू सोला परि बिरत विचार करि

छंदरत्नावली-हरिरामदास

घनाक्षरी छंद में भी यह रूप घनाक्षरी छंद है।

घनाक्षरी छंद का एक और भेद-देव घनाक्षरी है। देव घनाक्षरी के प्रत्येक चरण में 8-8-8 और 9 पर यति देकर तैतीस वर्ण होते हैं। इसमें चरणांत में तीन लघु वर्ण होते हैं। उदाहरण -

झिल्ली झनकारें, पिक चातक पुकारै बन -16
मोरनि गुहारैं उठैं जुगनूँ चमकि-चमकि - 17
घोरे घन कारे भारे धुरवा धुरारैं धाय
धूमनि मचावैं नाचें दामिनि दमकि-दमकि।

विशेष:- कतिपय विद्वानों ने घनाक्षरी छंद को 'कवित्त' भी स्वीकारा है।

4. पद्माकर के संकलित छंदों में से रूप घनाक्षरी छंद को पहचानकर लिखिए।

योग्यता विस्तार

1. राधकृष्ण के अलौकिक प्रेम पर आधारित काव्यांशों का संकलन कीजिए।
2. रीतिकाल में भाव सौंदर्य और काव्य सौन्दर्य का माणिकांचन उपयोग हुआ है। ऐसे श्रेष्ठ काव्यांशों का संकलन कीजिए।
3. ब्रज की होली बाँसुरी, यमुना, सावन के झूलों पर आधारित काव्यांशों का संकलन कीजिए और कंठस्थ कीजिए।

शब्दार्थ

अबीर** -गुलाल, **वृन्द**-समूह, **दृगनि -आँखों में । ***कासौं***-किससे। ***कुंदन***-सोना। ***चारु***- सुंदर। ***निहारिये***-देखिए। ***नेरे***-समीप। ***बरजै***- मनाकरना ***किरीट***-मुकुट। ***आरूझाइ***-उलझाना। ***कपोल***-गाल। ***घन***-बादल । ***गौरि***-पार्वती। ***पायं परौ***- पैर पड़ती हूँ। ***नेकु***-तनिक। ***बरू***-वरदान। ***गुमान*** = घमंड। ***हारी***- थक गई। ***सौंह***-सौगंध । ***नीर***-पानी। ***बोर***-किनारे । ***आलिन***-सखियों। ***केलि***-क्रीड़ा। ***नवेली***-नवयुवती। ***कंज***-कमल

***